प्रकाशक :
सरोजिनी नाणावटी
मंत्री, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा
राजघाट, नअी दिल्ली-१

मूल्य : २५ नये ।

प्रथमावृत्ति : २,०८
मई, १९५९

द्रक :
ो गोपीनाथ सेठ,
नवीन प्रेस, दिल्ली ।

प्रकाशकीय

पू० गांधीजीके जीवनका सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू—उनकी अद्भुत अध्यात्मसाधना—आजतक बिलकुल अछूतासा रह गया था। श्री काकासाहबने उसकी चर्चा छेड़कर एक नया क्षेत्र खोल दिया है। इस दृष्टिसे यह छोटी-सी किताब महत्त्वपूर्ण साबित होगी।

ता० २ और ३ अक्तूबर १९५८ को आकाशवाणीके अहमदाबाद केन्द्रसे काकासाहबने गुजरातीमें दो व्याख्यान इस विषयमें दिये थे। इसी अरसेमें उन्हीं दो व्याख्यानोंका यह अनुवाद हमारी सभाकी व्याख्यानमाला में पढ़ा गया था, जिससे उपस्थित सज्जन बहुत प्रभावित हुये थे और बहुतों ने यह अनुरोध भी किया था कि ये व्याख्यान किताबके रूपमें अवश्य प्रकाशित किये जायँ। विषयका महत्त्व देखते और लोगोंकी रुचि ध्यानमें लेते हुए ये व्याख्यान किताबके रूपमें जनताके सामने हम रख रहे हैं।

सागर जैसे एक विशाल विषयको दो छोटेसे व्याख्यानोंमें समाते काकासाहबने सचमुच 'गागरमें सागर' भर दिया है। हमें विश्वास है कि लोग इस गगरियाका दिलसे स्वागत करेंगे।

गांधीजीकी अध्यात्मसाधना

गांधीजीकी अध्यात्मसाधनाके बारेमें बोलना बहुत बड़ी धृष्टता होगी। मैं खुद यह विषय पसन्द नहीं करता; लेकिन श्री अुमाशंकरभाअीने यह व्याख्यानमाला मुझपर लादी और कअी मुद्दे (विषय) सुझाये। अुसमेंसे बढ़ते-बढ़ते अिस विषयने यह रूप धारण किया। अहमदाबादमें दो व्याख्यान देना मंजूर कर बैठा था, अिसलिअे यह विषय अपने आप मुझपर सवार हो बैठा। और सचमुच, प्रवाह-प्राप्त कर्तव्यके रूपमें ही गांधीजीकी अध्यात्मसाधनाके बारेमें बोलने को तैयार हुआ हूँ।

मैं नहीं मानता कि गांधीजीके बारेमें जो बहुतसा साहित्य अभीसे तैयार होने लगा है अुसमें भी किसीने यह विषय हाथमें लिया हो!

आश्रमके व्रतोंपर जो भाष्य गांधीजीने लिखा है, अुसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित होनेपर अेक अंग्रेज व्यक्तिने अुसके बारेमें चन्द लेख लिखे थे सही। लेकिन अुसमें अिस सारे विषय-की चर्चा हुअी हो, अैसा नहीं लगता।

गांधीजीने स्वयं अपने बारेमें और अपनी प्रवृत्तियों के बारेमें लिखते हमेशा बहुत संयम बरता है। फिर भी अुनका अपना साहित्य सागरके जैसा विशाल हुआ है। आजके हिसाबके अनु-सार गांधीजीका साहित्य सौ-सवासौ ग्रन्थोंसे भी अधिक होगा। अुसमें भी गांधीजीने अपनी अध्यात्मसाधनाके बारेमें बाकायदा कुछ भी लिखा नहीं है। 'हिन्द स्वराज्य', 'आत्मकथा', 'दक्षिण

आफ्रिकाके सत्याग्रहका अितिहास', 'व्रत विचार' यानी 'मंगल प्रभात' आदि किताबोंमें अिधर-अुधर थोड़ा-कुछ मिलता है। लेकिन अपनी साधना और अपना चिन्तन बाकायदा शब्दबद्ध करनेकी गांधीजीको आदत ही नहीं थी।

और फिर भी अुनके साहित्यमेंसे तथा अुनकी प्रवृत्तियोंकी कार्यपद्धतिमेंसे बहुतसी बातोंको हम साररूप निकाल सकते हैं।

काफी फुरसत निकालकर, गहरे अध्ययन और चिन्तनके बाद, किसी समर्थ व्यक्तिको ही यह काम करना चाहिअे, क्योंकि गांधीजीकी अध्यात्मसाधनाके परिचय द्वारा ही हम गांधी-हृदय तक पहुँच सकेंगे।

अैसा चिन्तन-मनन मनुष्य-जाति चलायेगी ही। अिस समय तो अेक परती जमीनपर कदम रखने जितना ही प्रयास मैं करूँगा। आसानीसे अुपलब्ध साधन भी काममें लेने जितनी फुरसत अिस समय नहीं है। जो-जो बात अनायास याद आती है वही किसी तरह रुजू करके सन्तोष मानूँगा। अितना महत्त्वका सवाल अेकबार छिड़ जानेपर अिस विषयमें शोधखोज करने जैसा बहुत कुछ है यह ध्यानमें आकर जरूर किसी-न-किसीको अिस विषयमें गहराअीतक अुतरनेका सूझेगा।

गांधीजीकी आत्मकथा, अुनके कअी पत्र और बातचीतमें कभी-कभी व्यक्त होनेवाले अुनके आत्मनिवेदनात्मक अुद्गारोंपरसे यह स्पष्ट होता है कि ठेठ बचपनसे ही गांधीजीके मनमें, तथा आचरणमें तीव्र कर्तव्यनिष्ठाका भान रहता था। जवानीके दिनोंमें अुत्साहपूर्वक अनेक प्रवृत्तियोंमें कूद पड़नेपर भी, अुनकी वृत्ति कदम-कदमपर अन्तर्मुख होती थी; और जो-जो प्रवृत्ति वे शुरू करते अुसमें अुनकी पारमार्थिकता (seriousness) जरूर प्रवेश करती।

बचपनमें श्रवणकी कहानी सुनी हो या हरिश्चन्द्रका नाटक

देखा हो, तुरन्त 'अिसमेंसे मैं क्या बोध ले सकूँगा ? अपने जीवन में क्या दाखिल कर सकूँगा ?' अिसका विचार वे अचूक करेंगे। और तुरन्त अपने पिताकी अनेक तरहकी सेवा भी अुत्साहपूर्वक शुरू करेंगे। पितासे छिपाकर कुछ किया हुआ हो, तो अुसकी चुभन या खटक बरदाश्त न होनेके कारण पिताको चिट्ठी लिखकर वे भूलका अिकरार करेंगे ही। अिन्स्पेक्टरकी नाराजगीसे बचनेके लिअे कोअी शिक्षक अपने विद्यार्थियोंको गलत रास्ते ले जाय या लबारी सिखावे तो अुस रास्ते जानेका गांधीजी अिन्कार ही करेंगे। और फिर भी अैसे शिक्षकोंके प्रति भी विनय और आदरमें कमी आने नहीं देंगे। बुजुर्गोंके दोष साफ नजर आनेपर, समझनेपर भी अुनके प्रति विनयकी मात्रा थोड़ी भी घटने न देना, यह गांधीजीके स्वभावकी विशेषता अुनके जमानेमें स्वाभाविक थी। आज तो अिस बातपर यकीन करना भी बहुतसे लोगोंके लिअे मुश्किल होगा।

अैसी कर्तव्यबुद्धि, निर्मल सत्यनिष्ठा और अन्तर्मुख मनोजागृति ही आध्यात्मिक साधनाकी मजबूत बुनियाद है। छोटे-बड़े मोहोंके वश न होना और सही रास्तेपर चलनेकी हिम्मत करना, यही है चारित्र्यकी नींव। गांधीजी नम्रतासे कहते हैं कि जब-जब वे मोहवश बनकर गलत रास्तेपर जानेको तैयार हुअे, तब-तब परमात्माकी कृपाने अुनको बचा लिया है। परमात्माके मानी ही हैं अन्तरात्मा। अुसकी शक्तिसे ही गांधीजी अपने आपको बचा पाये हैं। श्रेय और प्रेयके बीच हर हृदयमें झगड़ा चलता ही है। अैसे हरअेक झगड़ेमें, हृदयमें विराजमान अन्तरात्माकी मददसे मनुष्य श्रेयको पकड़े रहे, तो वह सच्चा साधक हुआ। अुसमें आध्यात्मिक वीरता आये बगैर रहेगी नहीं।

गुजरातके वैष्णव बनिया कुटुम्बके स्वाभाविक वायुमंडलके अनुसार गांधीजी भी शाकाहारी यानी निरामिषाहारी थे।

मांसाहारकी ओर आकर्षित होनेका कोअी कारण भी नहीं था। अेक बहादुर मुसलमान साथीकी केवल सुहबतके कारण मांस खानेके लिअे वह कभी भी तैयार नहीं होते। लेकिन जिह्वा-लौल्य के कारण जिस रास्ते वह नहीं जाते, अुस रास्ते जानेके लिअे अुनको अुनकी देशभक्तिने प्रेरित किया। अंग्रेजोंका राज्य हटाना हो तो शरीरसे अंग्रेज जैसा ही मजबूत बनना होगा, मांसाहारके बिना वह ताकत नहीं आ सकेगी, अैसी विचार-शृंखलाके कारण वे कुछ कालके लिअे मांसाहारी बने। लेकिन यह सब छिपाकर करना पड़ता है और सत्यनिष्ठाको आघात पहुँचता है अिस भान के कारण ही अुन्होंने मांसाहार छोड़ा। विलायत जाते समय माताको दिये हुअे वचनोंमें मांसाहारसे दूर रहनेकी बात भी थी। अिसलिअे अुन्होंने अिस विषयका गहरा अध्ययन किया और विलायतकी वेजिटेरियन सोसायटी (अन्नाहारी मंडल) में वे शामिल हुअे। 'हमें जैसा सुखदुःख होता है, वैसा ही प्राणियोंको भी होता है। अुन्हें मारकर अुनके मांस द्वारा अपने मांसकी वृद्धि करना महापाप है।' यह बात चित्तमें जम गअी और प्राणीजगत् सर्वत्र अेक है, अुसके प्रति आत्मीय भाव बढ़ाना चाहिअे यह बात वे अच्छी तरह समझ गअे; और अुनकी अहिंसा-की साधना शुरू हुअी। पश्चिमके अन्नाहारी लोग दूध नहीं पीते, क्योंकि 'दूध कोअी शाकाहार या धान्याहार नहीं है। मांस-मज्जा-रक्तका निचोड़ है। और मक्खन-घी तो केवल चरबी है।' अिस विचारके कारण पश्चिमके लोगोंके समान गांधीजीने भी दूधका त्याग किया, और अपने साथियोंको भी वैसा करनेके लिअे प्रेरित किया। लेकिन गाय, भैंसका दूध न लेनेका जो व्रत अुन्होंने लिया वह तो अुन प्राणियोंके प्रति दूधके लोभसे होनेवाले अत्या-चारोंकी घृणाके कारण। जीवनका हरअेक अनुभव गांधीजीके लिअे आध्यात्मिक साधनाकी अेक-अेक सीढ़ी बन गया था।

अन्नाहारके प्रयोग चलाते अन्नसिद्धिमें अग्निप्रयोग कम करनेकी बात सूझी। अेक तरफ अहिंसाकी खोज और दूसरी तरफ आदर्श आहारका वैज्ञानिक शोध—अिस द्विविध प्रकारसे गांधीजी प्रेरित हुअे मालूम पड़ते हैं। आहारके बारेमें वैज्ञानिक शोध और आध्यात्मिक प्रगतिके लिअे आवश्यक आहार-शुद्धिकी साधना ये दोनों बातें अुनके जीवनमें आखिर तक चलीं।

गांधीजी वर्धा और सेवाग्राममें थे तब गरीबोंको बिना खर्चा किये या कम-से-कम खर्चेमें पौष्टिक आहार किस तरह मिल सके, शाक और सब्जीके कौन-कौनसे पदार्थ प्रतिष्ठित लोगोंके आहारमें नहीं हैं और फिर भी पौष्टिक हैं, अिसका शोध अुन्होंने बहुत जोरोंसे चलाया था। सोयाबीन्सकी मददसे दूध-परका अवलम्बन टाल सकते हैं या नहीं? अिसकी खोज भी लम्बे अरसे तक अुन्होंने चलाअी।

ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह दोनोंके बारेमें अुनके आदर्श जिस तरह पहले अत्यन्त अुग्र रूपके थे और बादमें अुनमें कुछ परिवर्तन हुआ, अुसी प्रकार आहारके प्रयोग करते अस्वाद-व्रत सम्बन्धी अुनके विचारोंमें भी परिवर्तन हुआ था या नहीं, हम नहीं जानते। ब्रह्मचर्य और स्वादजय दोनों अेक ही प्रकारकी आध्यात्मिक साधना है अैसा वे मानते थे। स्वादके लिअे नहीं, किन्तु शरीर-धारण और शरीर-पुष्टिके लिअे जितना जरूरी हो अुतना ही मनुष्य खाय और आवश्यकतासे अधिक, या अधिक बार न खाय अैसा अुनका आग्रह था। अुनके अिस आग्रहका ब्रह्मचर्यकी कल्पनापर भी असर हुआ और अन्तमें—कामतृप्तिके लिअे नहीं, विकार-सेवनके लिअे नहीं, किन्तु केवल प्रजोत्पत्तिके लिअे अगर आदमी स्व-स्त्री सम्भोग करे, तो वह ब्रह्मचर्यके लिअे बाधक नहीं है, अिस निर्णयपर वे आ पहुँचे। आहार-सेवनके साथ स्वादरस मिलता है; प्रजोत्पत्तिके लिअे सम्भोग करते कामतृप्ति

अपने आप होती है; अिन दोनों बातोंका वे स्वीकार करते थे। और अिसलिअे अगर स्वादतृप्ति या विकारतृप्तिका हेतु न रखा जाय और केवल देहधारण अथवा प्रजातंतुका अविच्छेद यही अेकमात्र अुद्देश रखकर अगर मनुष्य आहारसेवन या संभोग करे तो अुस वक्त जो स्वादरस मिलता है अुसका त्याग ही करना चाहिअे अैसा गांधीजीने कहीं भी कहा नहीं है, लिखा नहीं है। अविहित आहार या संभोग करते शरीर ही अिन्कार कर बैठे यह थी अुनकी पूर्ण संकल्पसिद्धिकी सर्वोच्च कल्पना।

गांधीजीने यरवड़ा जेलमें अेक बार अुपवास शुरू किया था। अुस समय जेल सुपरिन्टडेन्ट कर्नल जोन्सने अुनको जब खानेके लिअे आग्रह किया तब अुन्होंने कहा था कि, 'अुपवास करनेका मेरा संकल्प अितना दृढ़ है कि मुँहमें मैं खुराक ठूँस दूँ तो भी मुँहमें मुखरस नहीं छूटेगा। मुँह सूखा ही रह जायगा और खुराक गलेसे नीचे नहीं अुतरेगी।'

अुसी प्रकार अगर कोअी अुन्हें विकारी करनेकी कोशिश करे, अुनके साथ कामचेष्टा चलावे, तो अुनका शरीर काष्ठवत् हो जायगा, विकारी नहीं होगा, अेक भी स्नायु (muscle) चलित नहीं होगी—अैसा अुनको विश्वास था। आध्यात्मिक आदर्श तो था ही।

यह आदर्श कहाँतक शक्य या व्यवहार्य है, अिस प्रकारकी चर्चा पश्चिमके अेक भाअीने मुझसे छेड़ी थी, तब मैंने दलील की थी कि जिस आदमीके तलवे या बगल बहुत ही सूक्ष्म-वेदी (sensitive) होते हैं—अुसको वहाँ कोअी स्पर्श करे तो असह्य गुदगुदी होती है; अैसे लोग भी अपने हाथसे अपने तलवोंको हलकेसे या चाहे जिस तरह स्पर्श करें तो भी अुनको गुदगुदी नहीं होती। क्योंकि सारे शरीरमें परिपूर्ण आत्मीयता अथवा अेकता होती है। अैसी ही अेकता अगर हम दूसरेके शरीरके

लिअे अनुभव कर सकें तो अुसके स्पर्शसे गुदगुदी नहीं होनी चाहिअे। और अुसी न्यायसे शरीर या मन विकारी भी नहीं होना चाहिअे।

विलायत जानेके पहले माताको दिये हुअे मांसाहार-त्यागके वचनमेंसे प्रथम आहारशास्त्रके अध्ययन और अुसमेंसे स्वाद-जय तक गांधीजी पहुँच गये। ऋषि-मुनियोंकी श्रद्धा *'जितं सर्वं जिते रसे'* अुनके लिअे बहुत ही मददगार और दिशादर्शक साबित हुअी।

गांधीजीने बचपनमें, अुनके जमानेके मिशनरी लोगोंके मुँहसे हिन्दू धर्मकी निन्दा और धर्मान्तरकी सिफारिश सुनी थी। यह बात हमारे अन्य लोगोंके समान अुनको भी सख्त नापसन्द थी। लेकिन विलायत जानेके बाद कअी धर्मनिष्ठ सज्जनोंसे अुनकी मुलाकात हुअी। चुनांचे औसाअी-धर्मका स्वीकार करनेके बारेमें अुन लोगोंके आग्रहका भी विचार करना पड़ा। गांधीजीने कहा कि, 'मुझे अपने धर्मका और आपके धर्मका पहले गहरा अध्ययन करना होगा। अुसके बाद ही दोनोंकी तुलना कर सकूँगा।' पार-मार्थिक वृत्तिवाले गांधीजीने अपने धर्मका और औसाअी-धर्मका गहरा अध्ययन किया। अेक तरफ सत्यनिष्ठा बहुत अुत्कट बनाअी, दूसरी तरफ दोनों धर्मोंके प्रति हार्दिक आदर मनमें रखा और अिस प्रकार गहरा अध्ययन और चिन्तन चलाया। किसी भी वक्त अुनको स्वधर्म छोड़नेका मन नहीं हुआ। पतिव्रताकी पतिनिष्ठाके समान ही अुनकी स्वधर्मनिष्ठा अडिग रही और साथ-साथ सर्वधर्म-समभाव भी जागा। हर-अेक धर्ममें अैसी कुछ बातें भी होती हैं कि जिनका समर्थन नहीं हो सकता। अैसी बातें अगर खराब मालूम हो जायँ तो अुनका त्याग करनेकी हिम्मत गांधीजीने पहलेसे बताअी है। लेकिन अगर अैसी बात त्याज्य न हो, लेकिन बुद्धिसे परे हो,

गूढ़ हो, तो अुसका त्याग करनेके लिअे गांधीजी तैयार नहीं थे। अैसी वातोंके प्रति या तो श्रद्धा-आदर रखना, अथवा कम-से-कम अपना अभिप्राय या निर्णय मुलतवी रखना—यही अुनको अुचित लगता था। बुद्धिवाद और श्रद्धाके बीच अुन्होंने सुन्दर-से-सुन्दर समन्वय साधा था।

धर्मसंस्थापक, ॠषिमुनि तथा संतमहात्मा सभी पारमार्थिक पुरुष सत्यका साक्षात्कार करनेके लिअे अुत्कट साधना चलानेवाले होते हैं। धर्मकी परिभाषामें अुन्हें 'परम आप्त' कहा जाता है। अैसोंके प्रति अटूट श्रद्धा होनी ही चाहिअे अैसा गांधीजीका आग्रह था। चुनाँचे अैसे लोगोंके वचनोंमें भूल दीख पड़े, विसंगति मालूम हो जाय, तो अुनका दोष देखनेके वजाय अुन वचनोंका संग्रह करनेवालेकी ही कोअी गलती होगी, अैसा माननेकी तरफ गांधीजीका झुकाव रहता अथवा वे यह कहकर छूट जाते कि, 'यह वात मैं समझ नहीं पाता।' लेकिन जो वात गले न अुतरे, या कसौटीमें सच्ची सावित न हो, अुसे माननेके लिअे गांधीजी कभी भी तैयार नहीं होते थे। अपनी सत्यनिष्ठापर वह जरा भी आँच आने नहीं देते। [श्री आद्य शंकराचार्यका अेक वचन यहाँ याद आता है—'अग्नि शीतल होता है,' अैसा सौ श्रुतियाँ (धर्मशास्त्र या वेदवचन) हमें कहें तो भी हम वह थोड़े ही माननेवाले हैं!]

हिन्दू धर्मके और अीसाअी धर्मके ग्रन्थ देखनेके वाद दूसरे धर्मोंके ग्रन्थ भी गांधीजीने अपने संतोषकी खातिर पढ़ लिअे। कअी धर्म-ग्रन्थोंके वारेमें अुनके मनमें असंतोष पैदा हुआ, वह अुन्होंने अपनी निजी टिप्पणी पोथीमें लिख भी रखा है, लेकिन जाहिर नहीं किया।

योगविद्या और गूढ़ विद्याके प्रति अुनके मनमें विश्वास था, आदर था; लेकिन अुस विद्याके नामपर जो ढकोसले चलते

हैं, गुप्तता रखी जाती है और अंधविश्वास बताया जाता है, अुसके प्रति गांधीजीके मनमें असंतोष और अप्रीति थी। यह सब अुनकी सत्यनिष्ठाका ही फल था।

आहार-शुद्धिके और स्वादजयके अुनके आध्यात्मिक प्रयोगों के साथ अुपवासका तत्त्व भी मिल गया। गांधीजीने देखा, सभी धर्मोंमें आध्यात्मिक साधनाके तौरपर, अुपवासको स्थान है। धर्म-संस्थापकोंने और अध्यात्मवीरोंने छोटे-बड़े बहुत अुपवास किये हैं। गांधीजीने क्रोधपर विजय पानेके लिअे, चित्तशुद्धिके लिअे और विरोधी व्यक्तिपर असर डालनेकी खातिर किये गअे सत्याग्रहके रूपमें अुपवासका महत्त्व पहचाना और अुन्होंने अनेक बार अुपवास किये। अुनमेंसे कुछ खानगी रहे हैं। कुछ अैतिहासिक सिद्ध हुअे हैं। अुपवासद्वारा शरीरशुद्धि और चित्तशुद्धि साधनी थी अिसलिअे अुपवासके साथ बस्ती-प्रयोग का —अेनिमाका — महत्त्व वे समझ गअे थे और जलसेवनके लाभ भी अुनको मालूम थे। अुनके हर अुपवासके बाद अुनकी कान्ति बढ़ती थी, शरीरमें नये खूनका संचार होता था और अुनके विचारोंमें भी अेक तरहकी ताजगी आ जाती। अध्यात्मकी दृष्टि-से वह जोरदार प्रगतिका अनुभव करते। मानसिक शान्ति तो अुन्हें मिलती ही। शरीरशुद्धिके लिअे किये जानेवाले अुपवासके बारेमें अुन्होंने विस्तारसे लिखा है। अुपवासके आध्यात्मिक प्रभावके बारेमें अुन्होंने विस्तारसे लिख रखा होता तो अच्छा होता।

सब धर्मोंमेंसे प्राप्त की हुअी और आदरपूर्वक चलाअी हुअी गांधीजीकी दूसरी साधना थी प्रार्थना। अेक तरहसे गांधीजीकी कोशिश सारा जीवन प्रार्थनामय बनानेकी थी। लेकिन हररोज सुबह-शाम प्रार्थना करनेका अुनका आग्रह कभी भी ढीला नहीं हुआ था।

वह मानते थे और कहते थे कि सच्ची भक्ति हमेशा बढ़ती ही रहती है। गांधीजीके लिअे प्रार्थना आध्यात्मिक स्नान भी था और खुराक भी। परमात्मा के सान्निध्यका अनुभव करनेकी वह बड़ी-से-बड़ी अुपासना थी।

गांधीजीने अपने जीवनकी अुत्तरावस्थामें शिक्षाका जो सिद्धान्त दुनियाके सामने रखा कि शिक्षा समस्त जीवनकी तैयारी मात्र है अितना ही नहीं, बल्कि जीवनद्वारा ही शिक्षा लेनी चाहिये (Not only education for life, but also education through life.), वह सिद्धान्त अुनकी अध्यात्मसाधनाको भी लागू होता है। जीवनके सभी प्रसंगों और जीवनके सभी पहलुओंका अुपयोग अुन्होंने अध्यात्मसाधनाके लिअे और अध्यात्मसाधनाके रूपमें किया है।

सत्य ही अुनका परमात्मा था। सत्य ही अुनका जीवन-रहस्य था। जीवन जीना, सत्यके प्रयोग करना और अध्यात्मकी साधना चलाना अिन तीनोंमें वे कोअी भी फर्क नहीं करते थे और अिसीलिअे अुनकी अध्यात्मसाधना जीवनव्यापी, जीवनमय और अखण्ड चलती थी। अिस साधना पर आँच आये अैसी कोअी भी बात अपने जीवनमें दाखिल न हो अुसकी अुन्होंने पूरी-पूरी जागरुकतासे सावधानी बरती थी।

दो-अेक प्रसंग मुझे याद हैं जब कि कोअी जरूरी बात भूल जानेके कारण अुन्होंने अुग्र पश्चात्ताप किया था कि, 'गाफिल न रहनेका मेरा सतत प्रयत्न होनेपर भी अैसी बात मैं भूल ही कैसे गया ?'

कला ही अेक समर्थ जीवनसाधना है अैसा माननेवाला अेक पक्ष आजके जमानेमें प्रबल हुआ है। Fulfilment of life through realisation of beauty—यह है अुनका आदर्श। जिसने अिस पक्षका त्याग कर, कर्तव्यके क्षेत्रमें प्रवेश किया

अैसे अक साधकने कहा है—'I slept and dreamt that life was Beauty. I woke and found that life is Duty.' गांधीजीको Beauty और Duty के द्वंद्वमें खिंचना ही नहीं पड़ा। अुनके लिअे Duty में ही Beauty समाअी जाती थी। कर्तव्यपालनमें जो असीम आनन्द मिलता है वही सच्चा सौन्दर्य है। Handsome is that handsome does—यह गोल्डस्मिथका वाक्य गांधीजीका प्रिय वचन था।

जिस विचारका जीवनमें अमल नहीं हो सकता, वह अुनके लिअे केवल कल्पना ही थी। अिसका अुत्तम अुदाहरण वेदान्त सिद्धांत का ले सकते हैं। गांधीजीका विश्वास अद्वैत सिद्धान्तपर था। 'अहं ब्रह्मास्मि' और 'सर्वं खलु अिदं ब्रह्म','अयं आत्मा ब्रह्म' आदि सब महावाक्योंपर अुनकी पूर्ण श्रद्धा थी। फिर भी सुबहकी प्रार्थनामें श्रीमद् भगवत्पादाचार्यका प्रातःस्मरण जब मैंने दाखिल किया तब गांधीजीने कहा, "'तद् ब्रह्म निष्कलम् अहम् न च भूतसंघः।' यह पंक्ति गाते मुझे कँपकँपी छूटती है। सिद्धान्त तो वही सही है। लेकिन अुसका अनुभव नहीं होता तबतक अैसे वचन मुँहसे निकालें ही किस तरह? भूतसंघके साथका हमारा अैक्य जरा भी टूटा हुआ न हो, तब 'मैं भूतसंघ नहीं, मैं ब्रह्म हूँ।' अैसा कहते संकोच होता है।" सबके प्रति—अपने आसपासके सभी लोगोंके प्रति, जिनके साथ अपना जीवन संकलित है अुन सबके प्रति—अपनी आत्मीयता पूर्ण रूपसे विकसित करना ही अुनकी मुख्य साधना थी। अिसका अेक रूप यह था कि जो कुछ जीवनसाधना अुनके हाथ लगती और शुरू करनेका मन होता, अुसमें शरीक होनेके लिअे वे अुन सबको निमन्त्रण देते थे और वैसा सम्भव न हुआ तो कम-से-कम अुन सबको अपनी साधनाके साक्षी बनाये बिना अुनसे रहा नहीं जाता था। अपनेको जो कुछ मिला हो अुसका सबके साथ

संविभाग, बँटवारा करनेकी सिखावन देते ऋषियोंने कहा है—'अिष्टैः सह भुज्यताम्।' गांधीजीने यह सिखावन अपनी जीवन-साधनाको भी लागू की, विश्वात्मैक्य अनुभव करनेका अच्छेसे अच्छा रास्ता ढूँढ़ निकाला और अिस तरह कर्मयोगमेंसे ज्ञान-योगतक पहुँचनेका राजमार्ग तय करके दिखाया। 'सर्वं कर्म अखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।' यह गीताका वचन अुन्होंने अपनी साधना द्वारा सिद्ध कर बताया और अिसीलिअे अखण्ड अुद्योग, अखण्ड कर्मयोगका आग्रह रखते हुअे भी वे जोर देकर कहते थे कि, 'मनुष्यका समस्त जीवन विचारमय होना चाहिये।'

आहारके प्रयोग हों, ब्रह्मचर्यके पालनकी साधना हो या नवराजनीतिकी बात हो, बहुतसे लोगों द्वारा प्रयोग किये बिना अुनको सन्तोष नहीं होता; और जो बात सब साथियोंके लिअे साध्य होना मुश्किल साबित होता वह छोड़ देनेकी भी अुनकी तैयारी रहती। अुनके लिअे यह केवल अेक व्यवहारका नियम नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक साधना थी।

कुछअेक बाबतोंमें अुन्होंने व्यक्तिगत साधना चलाअी थी सही, लेकिन वह भी साथियोंसे कहकर ही, अुनके जानते हुअे और अुनके 'आशीर्वाद'के साथ ही। 'आशीर्वाद' अुनका खुद का अिस्तेमाल किया हुआ शब्द है।

दक्षिण आफ्रिकासे भारत आ जानेके बाद थोड़े ही दिनोंमें अुनका कहा हुआ याद आता है कि, "मैं तो स्वतन्त्र आदमी हूँ। मुझे अपना स्वराज्य मिल चुका है। अंग्रेजी राज्यका मैं गुलाम नहीं हूँ। मुझपर वे राज्य कर ही नहीं सकते और फिर भी भारत को स्वराज्य प्राप्त कर देना है अिसलिअे अंग्रेजी राज्यकी आन मैं मानता हूँ। और जबतक सत्याग्रह नहीं करना है तबतक राज्यके सब कानूनोंका और हुक्मोंका पालन भी मैं करूँगा। प्रजाकी

सेवा करनी हो तो प्रजाकी मर्यादाओंका भी स्वीकार करना पड़ता है।" अुनके अिन वचनोंके पीछे भी सामुदायिक साधनाकी ही वृत्ति थी। जो सबको मिला नहीं अुसका अुपयोग स्वयं नहीं करना—यह अुसकी अेक बाजू है। और जिन मर्यादाओंका सबको मजबूरन् स्वीकार करना पड़ता है अुनका स्वयं स्वेच्छासे स्वीकार करना—यह अुसकी दूसरी बाजू हुआी। दोनोंसे गांधीजी की आध्यात्मिक साधनाकी विशेषता स्पष्ट होती है।

सत्यकी शोधमें जिस तरह अुन्होंने जीवनके अनेक प्रयोग किये, अुस प्रकार सत्यनिष्ठ लोगोंके पाससे सहवास, शुश्रूषा और परिप्रश्न द्वारा आवश्यक ज्ञान प्राप्त करनेकी भी कोशिश की है। सन्तोंके वचनोंपरका अुनका विश्वास, शास्त्र-वचनके प्रति अुनकी आदर-भावना और अुस-अुस विषयोंके तद्विदों, जानकारोंके पाससे पत्र-व्यवहार द्वारा और सम्भाषणों द्वारा जानकारी हासिल करनेकी अुनकी तत्परता—यह भी अिसी कोशिशका दूसरा पहलू है। तद्विदोंके पाससे जानकारी प्राप्त करके भी अुनके अभिप्राय अपने जीवन-सिद्धान्तोंपर कसे बिना वे स्वीकार नहीं करते थे। यह अुनकी विशेषता भी ध्यानमें लेने लायक है।

अुनके जीवन-कर्मयोगने ही अुन्हें सत्यनिर्णयकी कसौटी दी और ग्राह्य-अग्राह्य तय करनेके लिअे छलनी दी; और अिससे भी विशेष यह कि जीवन-कर्मयोगने ही सिद्धान्तोंका पालन करते कौनसी युगमर्यादाओंका स्वीकार करना चाहिअे, यह भी बता दिया।

स्वयं जब दक्षिण आफ्रिकामें थे, तब वहांके आफ्रिकन लोगोंके अधिकारका सवाल अुन्होंने हाथमें नहीं लिया; मांसाहार-त्यागका प्रचार भारतमें भी अुन्होंने नहीं किया; गोरक्षाके सवालको अुन्होंने गोसेवाका रूप दिया; ये तीन अुदाहरण हो

अपने जमानेकी और अपनी परिस्थितिकी मर्यादायें वे किस प्रकार पहचानते थे, यह सिद्ध करनेके लिअे पर्याप्त होंगे।

संस्कारी ज्ञानदानके वायुमण्डलमें अमुक मर्यादाओंका पालन आवश्यक होता ही है। बचपनसे ही अुनकी आदत होनेके कारण अुसमें दिक्कत भी नहीं पड़ती। लेकिन अुस मर्यादामेंसे संयमका महत्त्व समझमें आता ही है, अैसा नहीं कह सकते। गांधीजीके जीवनमें बाकायदा संयम दाखिल हुआ, अुनके अुत्कट जाहिर सार्वजनिक जीवनमेंसे। सेवाका व्रत चलाना हो तो मनुष्यको अपनी शक्तियोंका संग्रह करना चाहिये। शारीरिक और मानसिक शक्तियोंका व्यर्थ व्यय न हो, जीवनके अेक-अेक क्षणका अुपयोग हो, सार्वजनिक पैसोंका कमखर्चीसे व्यवहार हो, जाहिर आन्दोलन चलाना हो तो लेखन और भाषामें सम्पूर्ण सत्यनिष्ठाके अलावा भाषाका संयम भी होना चाहिये, जिनके लिअे पर्याप्त प्रमाण न हो अैसे विधान नहीं करने चाहिये, विपक्षी मनुष्यकी दृष्टि समझ लेकर, जो बातें अुसके हकमें हों, अुनका साफ दिलसे स्वीकार करना, आदि सब तत्त्व सत्यनिष्ठ गांधीजीके लिअे स्वाभाविक हुअे।

दक्षिण आफ्रिकाके स्वदेशी भाअियोंकी मुश्किल दूर करनेके लिअे गांधीजी अुनको अर्जियाँ तैयार कर देते थे, अुनकी तरफसे आन्दोलन चलाते थे। अिस दौरानमें अुन्होंने देखा कि, जब हम ब्रिटिश प्रजाजनके रूपमें अमुक हक माँगते हैं तब ब्रिटिश प्रजाजनके लिहाजसे ब्रिटिश साम्राज्यके प्रति अमुक कर्तव्योंका पालन तो हमें करना ही होगा। अूपर-अूपरके विनय या दम्भके लिअे नहीं, किन्तु सचमुच अेक प्रामाणिक नागरिकके रूपमें साम्राज्यके प्रति हमें निष्ठा रखनी चाहिये। गांधीजीने यह वृत्ति धारण की और अुससे अुनकी गोरे लोगोंमें प्रतिष्ठा भी बढ़ी। साम्राज्यनिष्ठाके साथ ब्रिटनका राष्ट्रगीत गानेकी बात भी

स्वाभाविक रूपसे पैदा हुआी। अुसके अन्दरकी असंस्कारी पंक्तियाँ गांधीजीको पसन्द नहीं आअीं। "O Lord our God arise scatter her enemies, confound their politics, frustrate their knavish tricks."—अिस प्रकारकी पंक्तियाँ गाते संकोच होता है, अैसा खुल्लम्-खुल्ला गांधीजी अिसलिअे कह सके, कि वे अुन लोगोंका राष्ट्रगीत श्रद्धापूर्वक गाते थे।

जो कुछ भी करना विचारपूर्वक और श्रद्धापूर्वक करना; जो कुछ भी भूमिका धारण करनी पड़े वह दम्भसे या अूपर-अूपर की निष्ठासे नहीं, लेकिन अुसकी गहराअीमें अुतर कर अुसके तत्त्वज्ञानका स्वीकार करके ही धारण करनी चाहिअे—यह जो गांधीजीका निश्चय था, अुसे मैं अुनकी सबसे बड़ी आध्यात्मिक साधना मानता हूँ। क्योंकि अिस प्रकार वे अन्तर्बाह्य स्वच्छ और सत्यनिष्ठ रह सके थे। अिस निष्ठामेंसे ही अुनको अुनकी प्रधान आध्यात्मिक साधना प्राप्त हुअी, जिसे अुन्होंने 'सत्याग्रह' का नाम दिया। सत्याग्रह यानी आत्माके प्रति अनन्य निष्ठा; अिसलिअे हम अब अुस निष्ठाका ही थोड़ा चिन्तन-मनन करें।

❀ ❀ ❀

भारतमें तथा विलायतमें तत्त्वनिष्ठ आचरण करनेका प्रयत्न करते गांधीजी दक्षिण आफ्रिका पहुँचे। देश गरीब, अज्ञान काले लोगोंका। राज्य मिजाजी गोरोंका। और हमारे लोग वहाँ जाकर अपमानास्पद हालतमें रहकर, धन कमानेकी कोशिश करनेवाले। अुनके बीच गांधीजीको अनपेक्षित और अप्रिय अनुभव होने लगे। परिस्थिति सब तरहसे प्रतिकूल। देश पराया, राज पराया। संख्या, धन या अधिकार सब तरहसे नगण्य। अैसे लोग अिज्जत-आबरूसे किस तरह जी सकते हैं? गांधीजी ने बहुत गहराअीसे जीवनमन्थन किया और अुनकी आत्मा

जाग्रत हुआी और अुसने अपनी आन्तरिक शक्ति ढूँढ़ निकाली। किसीको मारकर राज्य हासिल करनेका या दबाकर राज्य चलानेका सवाल नहीं था। 'आत्मशक्ति द्वारा निश्चयबल और सहनशक्तिको पराकाष्ठातक पहुँचायेंगे तभी अिज्जत-आबरूसे रह सकेंगे।' अितना साक्षात्कार हुआ और अुसमेंसे सारी दुनियाके दबे हुअे लोगोंके अुद्धारके लिअे अेक नअी शक्ति, अेक नया रास्ता, अेक अभूतपूर्व तन्त्र खड़ा हुआ। अुस समय गांधीजीको कल्पना भी नहीं होगी कि मानवजातिके अुद्धारका काल समीप आनेके कारण अुनके प्रयोग और चिन्तनमेंसे अेक अवतारका जन्म हो रहा है। आज अितने सालोंके बाद हम साफ-साफ देख सकते हैं कि गांधीजीका सत्याग्रह ही आजके युगका अेकमात्र तरणोपाय, अेकमात्र अुद्धारका मार्ग है। आफ्रिकामें जो शक्ति प्रकट हुआी अुसी शक्तिका अुपयोग आज दक्षिण आफ्रिकाके आफ्रिकन लोग कर रहे हैं। और अुसी आफ्रिकाके काले लोग, अमेरिकाके गोरे लोगोंके खिलाफ यही शक्ति आजमा रहे हैं। गांधीजीने स्वयं भी कहा था कि, 'समय आने पर आफ्रिकाके नीग्रो लोग हमें सत्याग्रहका सफल प्रयोग कर दिखायेंगे।'

आफ्रिकामें गांधीजीने जो मनोमन्थन किया, ब्रह्मचर्यकी साधना की, सहनशक्तिको पराकाष्ठातक पहुँचाया और अुनकी दीक्षा भारतके अनेक प्रान्तोंके अनपढ़, असहाय स्वकीयोंको दी—वही गांधीजीकी अुत्कृष्ट-से-अुत्कृष्ट अध्यात्मसाधना थी। अुसमें अुन्होंने शरीरपर विजय पाअी। निर्वीर्य क्रोधको अेक तरफ रख दिया। परदेशमें बसनेवाले भारतीयोंके साथ तादात्म्य साधा, और अिस तरह आत्मशक्तिका साक्षात्कार किया और अिस नअी शक्तिको सत्याग्रहका नाम दिया, जो आज विश्व-मान्य बन चुका है।

आफ्रिकाके वे दिन मनोमन्थनके, जीवनमन्थनके, आत्मार्पण के, आन्तरिक अुग्र साधनाके और साथ-साथ समूह-साधनाके भी दिन थे।

तानाशाही राज्यसत्ताकी आज्ञाके खिलाफ जड़े होनेका निर्धार अगर टिकाना हो तो सब तरहकी पीड़ा सहन करनी ही चाहिये। अुसमेंसे सहनशक्ति, स्वादजय, शरीरश्रम, अुपवास, ब्रह्मचर्य और अन्तर्मुख बनकर अीश्वरकी अुपासना साधनेके लिअे करनेकी प्रार्थना ये सब बातें अुनको मिलीं। अुन्होंने देखा कि यह तपस्या और अुसके सब पहलू अुस अहिंसाके ही भिन्न-भिन्न पहलू या प्रकार हैं।

सत्यनिष्ठा द्वारा गांधीजी सतत विचारशुद्धि, हेतुशुद्धि और साधनशुद्धि साधते ही रहे। विचारशुद्धि अुनकी ज्ञान-मार्गकी साधना कही जा सकती है। हेतुशुद्धि, साधनशुद्धि और कर्तव्यनिष्ठा अुनके कर्मयोगका रहस्य है। सत्यनिष्ठा जैसे-जैसे बढ़ती गअी वैसे-वैसे अुनका तर्कशास्त्र और अनुमान-शास्त्र सूक्ष्म और सूक्ष्मतर बनते गये। कर्मयोगने अुन्हें अना-सक्ति सिखाअी और विश्वात्मैक्यकी समूहसाधनामेंसे अस्तेय और अपरिग्रह फलित हुअे।

दुर्दैवके कारण अथवा पुरुषार्थके अभावसे मनुष्यको जो दारिद्र्य सहन करना पड़ता है वह अुसे अूँचा नहीं ले जाता, अुन्नतिकारक नहीं साबित होता; अुलटे पामर बनाता है। लेकिन समाजके साथ अैक्य साधनेके हेतु जो अपरिग्रहवृत्ति जागती है वह तो मनुष्यको फकीरकी अमीरी सिखाती है। मनुष्यका परिग्रह जैसे-जैसे कम होता जाता है वैसे-वैसे अुसे अपने व्यक्तित्वके विकासके लिअे अनेकोंके साथ अैक्य अनुभव करनेका अवसर या अवकाश मिलता जाता है। यही बात रोमां रोलां (Romain Rolland) ने अेक छोटेसे अर्थगर्भ सूत्रमें

दी है—'The less I have, the more I am.' वेदान्ती भी कहते हैं कि अहंता और ममता जितने प्रमाणमें कम होती हैं, अुतने ही प्रमाणमें मनुष्य आत्मविकास साध सकता है। सर्वस्वके त्यागको ही हमारे पूर्वजोंने 'विश्वजित यज्ञ' कहा है। सम्राट्का अकिंचनत्व ! अुसकी शोभा तो कुछ और ही होती है।

सर्वोदयकी कल्पना गांधीजीके हृदयमें बोअी गअी और अुनके जीवनमें कायमी परिवर्तन हो गया। मेरा कुछ भी नहीं, जो कुछ है, सबका है। मैं तो केवल विश्वस्त हूँ, ट्रस्टी हूँ। मेरे हाथमें जो कुछ है, अुसे सबके लिअे अुपयोगमें लाना है, यह निश्चय हुआ और अपने सर्वस्वका वे विचार करने लगे, तब अुसमें अपनी शरीरशक्ति, बुद्धिशक्ति और अपना तमाम कौशल्य यह सब नजर आया। यह सब अपना नहीं है, सबका विनियोग, विसर्जन सबके लिअे करना होगा, यह निश्चय अुसके साथ पैदा हुआ। आसक्ति चली गअी और आत्मसाक्षात्कार स्पष्ट हो गया।

अिस आत्मसाक्षात्कारका सबसे बड़ा लक्षण है, अभय-सिद्धि। दारिद्र्यभय, रोगभय, मृत्युभय, समाजभय अैसे तमाम भय नष्ट होने लगे। आत्मार्थी और आत्मवान् निर्भय ही होते हैं। 'आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचन; न बिभेति कुतश्चन।'

जिसने सबके साथ अैक्यका अनुभव किया और जीवन सेवा-मय बनाया अुसके लिअे सेवा किसकी करनी, कितनी करनी, किस तरहकी सेवा योग्य गिनी जायगी और सेवा लेनी पड़े तो अुसका व्याकरण क्या होगा, यह सब जान लेना आवश्यक होता है। अिस प्रकार कर्तव्य-निर्णय करते हुअे स्वाभाविक रूपसे गांधी-जीको स्वदेशीका सूत्र मिला। 'स्वदेशका अभिमान' और 'स्वकीयों का स्वार्थ' अैसी दोनों तरहकी संकुचित वृत्तियोंसे प्रेरित स्वदेशी गांधीजीकी स्वदेशी नहीं थी। गांधीजीकी स्वदेशी को स्वधर्म

का ही अेक पर्याय माना जा सकता है। धर्मका पालन करते हुअे जिस तरह क्रम-प्राप्त हो जाता है, अुसी प्रकार अपनी भाषा, अपनी रहन-सहन, अपना समाज और अुसकी संस्कृतिके बारेमें भी है। यह बात समझना, अुसका स्वीकार करना और अुसे काममें लाना, अिसका नाम है स्वदेशी। जिस शरीरमें हमने जन्म लिया, अुस शरीरके द्वारा ही हम सेवा कर सकते हैं। फिर वह शरीर जैसा भी हो। यह जिस प्रकार अपरिहार्य है और अिस शरीरके द्वारा सेवा करने जाते हुअे अुस शरीरको टिकाना, सुधारना और अुसकी सेवाशक्ति बढ़ाना, जिस तरह क्रम-प्राप्त हो जाता है, अुसी प्रकार अपनी भाषा, अपनी रहन-सहन, अपना समाज और अुसकी संस्कृतिके बारेमें भी है। यह बात समझना, अुसका स्वीकार करना और अुसे काममें लाना, अिसका नाम है स्वदेशी। अिस व्याख्याके अनुसार स्वदेशीका पालन भी अेक अुत्तम आत्मसाधना ही सिद्ध होती है। स्वदेशीका पालन करनेसे ही जनता-द्रोह टाल सकते हैं। यह जनताद्रोह अथवा जनताशोषण (exploitation) टालना हो तो ग्रामोद्योगको और स्थानिक पुरुषार्थको प्रोत्साहन दिये बिना चारा नहीं। सर्वोदयका अर्थ ही है, अन्त्योदय।

'दुःख निवारण करना हो तो वह सबसे पहले समर्थका,' अैसी आजकी विकृत स्थिति है। अुच्चवर्गियोंकी, शहरी लोगोंकी और समर्थोंकी सेवा सबसे पहले होती है। शोर मचानेकी जिनमें शक्ति है अुनको सबसे पहले राजी किया जाता है। मध्यमवर्गका वसीला सब जगह पहुँचता है। अिसलिअे गबनके क्षेत्र सबसे पहले अुनको नजर पड़ते हैं और फिर वह आसानीसे वहाँ पहुँचकर पिछड़े हुअे लोगोंका शोपण चलाते हैं। अिससे विपरीत अन्त्योदयवृत्ति धर्मनिष्ठ यानी विश्वकल्याणनिष्ठ होनेके कारण शोपणको जड़से अुखाड़ देती है और आजीविका या विकासकी जो कुछ सुविधा अुपलब्ध हो अुसे पिछड़े लोगोंतक पहुँचा देती है। मात्र देशकी सम्पत्ति बढ़ानेके पहले भूखमरी

और भीजमरी नष्ट करनेके प्रयत्न होने चाहिये। यह है गांधीजी की स्वदेशीका आदर्श। और अिसलिअे जल्दबाजीसे अूपर-अूपर की प्रगति साधनेके बजाय ठेठ बुनियादसे प्रगति करने और सारी प्रजाको तैयार करनेकी ओर गांधीजीका ध्यान अधिक था। राष्ट्रीय संकल्पके आधारपर और प्रजाकी प्राणशक्तिसे जितनी प्रगति हम कर सकेंगे अुतनी ही हमारे लिअे माफिक आयेगी— यह अुनका निश्चय था। राष्ट्रकी कुल सम्पत्ति बढ़े यह काफी नहीं है। लेकिन राष्ट्रके अधिक-से-अधिक लोगोंकी 'सम्पत्ति पैदा करनेकी शक्ति' बढ़े, अुनका ज्ञान और कौशल बढ़े, संगठनका चातुर्य बढ़े, संक्षेपमें कहें तो सारी जनता तैयार हो जाय, यही मुख्य बात है।

अिस प्रकार लोकजीवनकी प्रगति साधनी हो तो त्यागके साथ अुद्योग और ज्ञानके साथ कौशल—अिन चारोंकी परिसीमा होनी चाहिये। बहुतसे लोग दबे हुअे रहें और फिर भी राष्ट्रकी बहुत प्रगति हो, यह सब आअिन्दा चलनेवाला नहीं है। अिस-लिअे लोगोंमें अखण्ड जागरुकता, विचारमय जीवन और चारित्र्यकी रक्षा तीनोंका आग्रह बढ़ाना चाहिये। लोकसेवाके अैसे प्रयत्नको ही गांधीजी अध्यात्मकी समूहसाधना कहेंगे।

आत्मशुद्धि द्वारा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आरोग्य प्राप्त करना और आरोग्यकी अैसी बुनियादपर सामर्थ्य और समृद्धिकी अिमारत खड़ी करना यह है गांधीजीकी व्यक्ति तथा समाजके लिअे आध्यात्मिक साधना। अिस सारी साधनाको अुन्होंने 'सर्वोदय' नाम दे दिया।

गांधीजीकी साधना केवल अपने लिअे या अपने-जैसे विरले महात्माओंके लिअे नहीं, बल्कि हरअेक मनुष्यके लिअे बनाओी गओी है। व्यक्तिका अुद्धार हो और समाज गिरा हुआ ही रहे अिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अुनकी दृष्टिमें आत्मोद्धार

और सर्वोद्धार साथ-साथ चलने चाहिये।

रोग टालना, रोग मिटाना और आरोग्य प्राप्त कर अुसे टिकाना अिस प्रवृत्तिके पीछे गांधीजीने पहलेसे अधिक गहराअी तक जाकर अपना चिन्तन चलाया था। अुनके लिअे शारीरिक रोग, सामाजिक रोग और आध्यात्मिक रोग, अिन तीनोंके बीच भेद नहीं था। स्वयं बीमार पड़ते तो अुसके कारण अिसी ढंगसे ढूँढ़ने लगते। अपने आहार या रहन-सहनमें भूल हुअी हो तो अुसकी खोज करते-करते वह अपने मनकी गहराअी भी जाँचते, और संकल्पकी छानबीन भी करते। कोने-गोशेमें कहीं विकार तो छिपे हुअे नहीं पड़े हैं अिसका भी शोध करते और अुसके अनुसार जीवनशुद्धिकी सर्वांगीण साधना प्रारम्भ करते।

अुनकी यह आरोग्यसाधना भी अहिंसाका ही अेक अंग था।

जब गांधीजी नोआखाली गये और वहाँका समाजव्यापी भीषण अत्याचार अुन्होंने देखा तब अुन्होंने दक्षिण आफ्रिकाके जितना ही गहरा चिन्तन किया और बिलकुल अकेले रहकर परिस्थितिपर काबू पाने और शान्तिकी स्थापना करनेके लिअे वहाँ अुन्होंने अपने ब्रह्मास्त्रका अभिमन्त्रण किया।

नोआखालीमें अुनसे मिलने मैं गया था तब अुन्होंने कहा कि अैसे कसौटीके संकट प्रसंगपर क्या करना चाहिअे यह मुझे अपने निसर्गोपचार, कुदरती अिलाजमेंसे सूझा है। गांधीजीके निसर्गोपचारमें सिर्फ कुदरती शक्तिका अुपयोग करनेकी बात नहीं थी। कुदरतका—प्रकृतिका स्वामी परमात्मा हरअेकके हृदयमें आत्मरूपसे विराजमान है; अपनी तपस्याके द्वारा, प्रार्थना और अुपासनाके द्वारा, रामनामके द्वारा अुस आत्माकी शक्तिको जाग्रत करना और अुस शक्तिकी मदद कुदरतको प्राप्त करा देना—यह थी अुनकी प्राकृतिक चिकित्सा। अिसलिअे अुसमें भी अुनकी आत्मसाधना ही प्रगट होती है।

गांधीजीने अनेक संस्थायें स्थापन कीं, चलाओीं, अुनमें परिवर्तन किया, अुनको तोड़ा और अुनके स्थानपर नओी संस्थायें चलाओीं। जिस अुत्साहसे अपना प्राण डालकर अुन्होंने संस्थायें खड़ी कीं, अुसी अुत्साहसे अुन्होंने संस्थाओंके आकारमें जबरदस्त परिवर्तन भी किया। जहाँ आसक्ति ही नहीं है वहाँ मोह और ममत्वको स्थान ही कहाँ? संस्था-संचालन भी गांधीजीकी जागरुक अध्यात्मसाधना ही थी।

अुनकी अध्यात्मसाधनाका दूसरा अेक क्षेत्र था अुनका अपना शरीर। अुस शरीरद्वारा अुन्होंने हमेशा अपनी अुत्कट-से-अुत्कट साधना चलाओी है।

माता-पिताके विकारमेंसे ही जिस शरीरका जन्म होता है अुसे निर्विकारी स्थितितक ले जाना कोओी मामूली साधना नहीं है। गांधीजी जब-जब बीमार पड़े, तब-तब अुन्होंने अत्यन्त अुग्र शरीरशुद्धि की। तब आसपासके लोग स्पष्ट देख सकते थे कि अुनके शरीरमें नये खूनका संचार हुआ है, शरीरकी कान्ति बढ़ी है। और मनकी शक्तियाँ शुद्ध और तेज हुओी हैं। बीमारीका अिलाज करते हुअे अगर वे अितना लाभ प्राप्त कर सके, तो समय-समयपर किये गअे अुनके अुपवासोंका तो पूछना ही क्या? हरअेक अुपवास अेक जबरदस्त साधना सिद्ध हुओी है। अितना ही नहीं, लेकिन अुपवासके अन्तमें अुनकी जीवनदृष्टि भी अधिक निर्मल, अधिक शुद्ध और अधिक आत्मपरायण बनी है।

आखिर-आखिरमें अपनी साधना अुग्र करनेके लिअे और अपनी मुख्य प्रवृत्तियोंपर अेकाग्र होनेके लिअे अुन्होंने अपनी बहुत-सी गौण प्रवृत्तियाँ अेकदम बन्द कर डालीं। अुसमें भी अुनकी अध्यात्मसाधनाकी अेकाग्रता ही दिखाओी देती है। अुनके जैसे साधनावीरको प्रवृत्तिका परिग्रह भी बाँध नहीं सकता था। कर्तव्य निश्चित हुआ, कि तुरन्त जो कर्तव्य नहीं है अुसका

त्याग करते अुनको थोड़ी भी देर नहीं लगती थी। अिस बातके असंख्य अुदाहरण दिये जा सकते हैं। यहाँ तो केवल अितना अिशारा करके सन्तोष मानना होगा।

अितनी अुग्र, अुत्कट और सतत साधना चलाते हुअे भी गांधीजीमें किसी समय धर्मध्वजीपन दिखाओी नहीं दिया। वे हमेशा साथमें माला रखते थे। लेकिन माला फेरनेका प्रदर्शन अुन्होंने नहीं किया। अुनका ध्यान-चिन्तन अखण्ड चलता था। लेकिन वे ध्यानमें बैठे हैं, अिसलिअे मिल नहीं सकते अैसा किसीको कहनेका मौका कभी नहीं आया। अत्यन्त महत्त्वका निर्णय लेनेकी बारी आवे और राष्ट्रका हित-अहित अुसपर निर्भर हो तब कभी-कभी समुदायोंमेंसे अुठकर पाँच-दस क्षणके लिअे वे अेकान्तमें जाते और तुरन्त स्वच्छ और दृढ़ निर्णय लेकर ही वापस आते।

गांधीजीकी स्वराज्य-साधना भी अेक अध्यात्मसाधना ही थी। लेकिन अुसमें अुनके मनमें स्वराज्यके दो आदर्श हमेशा साथ-साथ चलते रहते थे। अेक तो जो कांग्रेस चाहती थी, राष्ट्रको प्रिय था और जिसका अुन्होंने सेवन किया था वह राजनीतिक स्वराज्य। अुसकी साधनाको वे राष्ट्रका तथा अीश्वरका सौंपा हुआ काम मानते थे। और अुसकी सेवा पूरी वफादारीसे करते थे और अिसीलिअे अपने जीते-जी हिन्दुस्तानका स्वराज्य वे स्थापन कर सके तथा योग्य राष्ट्रभक्तोंके हाथों सौंप भी सके। लेकिन अैसे बाह्य अथवा दुनियावी स्वराज्यके साथ अुनके मनमें अुस आध्यात्मिक स्वराज्यका आदर्श भी था, जिसकी सेवा भी अुन्होंने अेकनिष्ठासे की है। अिस स्वराज्यकी पूर्वतैयारी अुन्होंने अपनी सारी शक्तिका अुपयोग करके की। शोषण-मुक्ति, शासन-मुक्ति और संकोच-मुक्ति—अिन तीन बातोंमेंसे पैदा होनेवाला स्वराज्य अुनकी दृष्टिसे सच्चा स्वराज्य था। अैसे अहिंसामूलक

आत्मैक्यसाधक स्वराज्यके लिअे अुन्होंने नअी शिक्षा चलाअी और अुसके लिअे 'सा विद्या या विमुक्तये ।' अिस ध्यानमन्त्रका स्वीकार किया ।

गांधीजीकी अध्यात्म-साधनामेंसे पैदा होनेवाले फलोंका आज हम अुपभोग कर रहे हैं। लेकिन भोगसे तपस्या क्षीण होती है। अगर हम अुनकी साधनाको समझकर, अुसे यथामति, यथाशक्ति आगे चलायेंगे, तभी हम गांधीजीके सच्चे अुत्तराधिकारी कहलायेंगे और मानवताकी कुछ सेवा कर सकेंगे।

जिस तरह सत्यकी शोध, सत्यकी निष्ठा और सत्यका आग्रह गांधीजीकी प्रधान जीवन-साधना थी, अुसी तरह अहिंसा भी गांधीजीका सार्वभौम जीवन-सिद्धान्त था। सत्य ही अुनका परमेश्वर था, वही आत्मा और परमात्मा था और अिससे भी विशेष यह सत्यनारायण ही अुनका गुरु था और अुसकी प्राप्तिका लक्षण था चराचर विश्वके साथ अैक्य और अुसके चैतन्य-तत्त्वके साथ अभेदरूप अैक्य। जहाँ अभेद और अैक्यका आदर्श स्वीकार किया वहाँ हिंसा तो असम्भव ही है। किसी मनुष्यकी या प्राणीकी हिंसा की तो वह सचमुच आत्महत्या ही होगी। यही बात गीताने अेक श्लोकमें स्पष्ट की है :—

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितम् ईश्वरम् ।
न हिनस्ति आत्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ।।

सर्वत्र, अेकसमान व्याप्त आत्मारामको जो देख सकता है, वह कैसे किसीको मार सकता है? मारना यानी अपनेको मारना अैसी स्थिति हो जाती है। आत्मज्ञानसे यह हिंसा नष्ट हो जानेपर परागति प्राप्त हो जाती है।

अिस प्रकारका आत्म-साक्षात्कार केवल चिंतनसे नहीं, किन्तु प्रत्यक्ष प्रेम और सेवासे, त्याग और संयमसे सिद्ध करना यह थी गांधीजीकी आजीवन अखण्ड साधना।

'यह चराचर विश्व मैं ही हूँ,' अैसा केवल चिन्तनसे मानना अेक बात है और अुस सारे विश्वकी सेवाके लिअे अपने स्वार्थ को भूल जाना, अुस सेवामें रुकावट पैदा करनेवाली अपनी वासनाओंको संयमपूर्वक दबा देना, जरूरत पड़नेपर शरीर भी अर्पण करना और अैसी साधना द्वारा ही आत्माका साक्षात्कार करना—यह सच्ची जीवनसाधना है। केवल चिन्तनमें आत्म-साक्षात्कारका आभास हो सकता है, वृत्तिकी मलिनता छिपी रह सकती है और कभी-कभी विश्वात्मैक्यका नशा भी चढ़ जाता है। लेकिन अैसी साधनामें कच्चापन रह सकता है। प्रत्यक्ष जीवनमें मनुष्यकी सब तरहकी कसौटी होती है। कर्म द्वारा ही ज्ञान कसा जाता है। किसीने यही महान् सिद्धान्त व्यवहारकी सादी भाषामें व्यक्त किया है—Action is a language which cannot lie. कोअी मनुष्य कहे कि 'मैं शूर हूँ,' तो लड़ बताये ताकि अुसकी बहादुरीके बारेमें शंका न रहे। कोअी कहे कि 'मैं गायक हूँ,' तो गा बताये। फिर अधिक सिद्ध करने जैसा कुछ नहीं रहता। नर्तक प्रत्यक्ष नृत्य कर बताये, दानेश्वर अपनी सम्पत्तिका त्याग कर बताये जिससे यकीन ही हो जाय। प्रेमकी पराकाष्ठा सेवा, त्याग और बलि-दान द्वारा ही पहचानी जा सकती है। अिसीलिअे तो कर्मयोग का अितना महत्त्व माना गया है। ज्ञानयुक्त, भक्ति-प्रेरित कर्म-योग ही सर्वोच्च आध्यात्मिक साधना मानी गअी है। 'ज्ञानात् अेव तु कैवल्यम्' माननेवाले श्री शंकराचार्यने भी कहा ही है कि कर्म द्वारा—अनासक्त कर्म द्वारा शुद्ध बने हुअे चित्तमें ही बोये गअे ज्ञानके बीज मोक्षका फल दे सकते हैं। और अुसीको वे वस्तूपलब्धि कहते हैं। शंकराचार्यकी दृष्टिसे ज्ञान महत्त्वका था। आजका जमाना—जिसमें लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी दोनों आ जाते हैं—ज्ञानयुक्त कर्मको प्रधानता देता है

और यही शुद्ध भूमिका है।

गहराअी से देखें तो कर्म द्वारा कसा हुआ, परखा हुआ ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। गीतामें ज्ञानकी जो व्याख्या है अुसमें जानकारी, तत्त्वनिर्णय और सिद्धान्तनिष्ठासे भी प्रत्यक्ष आध्यात्मिक जीवनके पहलुओंको ही प्रधानता दी गअी है। अन्त में तो सब कुछ अेक ही है। गांधीजीकी अध्यात्म-साधनाको हम विश्वात्मैक्यमूलक अनासक्त जीवनयोग कह सकते हैं। तमाम आसक्ति अेकांगितामेंसे पैदा होती है। पक्षपातरहित सबके साथ अैक्य साधा, आप पर भेद नष्ट हुआ, कि फिर आसक्ति नष्ट होकर अुसका स्थान पूर्णता ले लेती है। अिस पूर्णतामें मनुष्य स्वयं शून्य बन जाता है। अपनी साधना समझाते हुअे गांधीजीने अनेक बार कहा है कि, 'मनुष्यको चाहिअे कि वह अिस दुनियामें शून्य बनकर रहे। मिट्टीके कणसे भी छोटा बनकर रहे।' अैसे शब्दोंमें ही वे अपनी साधनाका स्वरूप समझाते थे। अैसी अिस सहज नम्रता द्वारा वे अपनी साधनाका सामर्थ्य व्यक्त करते थे।

मनुष्यके मनकी तथा समझशक्तिकी खूबी ही यह है कि सर्वोत्तम अनुभूति अभावात्मक शब्दोंमें ही वह शुद्धरूपसे व्यक्त कर सकती है। यही कारण है कि अुसने विश्वात्मैक्यको अद्वैत-का रूप दिया। सार्वभौम प्रेमको अहिंसाका नाम दिया। मोक्ष और निर्वाण ये दो शब्द भी अिस प्रकार नकारात्मक हैं। सबसे बड़ा देव—महादेव श्मशानवासी अकिंचन ही हो सकता है। अमृत पिये बिना और हलाहल पीकर भी वह स्वयंभूरूपसे अजरा-मर है। अुसका पुण्य क्षीण नहीं होता।

अपनी व्याख्याकी स्वदेशीका पालन करते हुअे, गांधीजीने केवल स्वकीयोंकी सेवा करते-करते और स्वदेशमें ही अपने कार्य-क्षेत्रका विस्तार करके भी, सारे विश्वकी सेवा चलाअी जो अब धीरे-धीरे अनेक देशोंमें, अनेक राष्ट्रोंमें और अनेक वंशके लोगों-

में अपना कार्य कर रही है।

व्यक्तिगत साधना और समूह-साधना अकसाथ चलानेवाले गांधीजीका प्रभाव सारी दुनियापर पड़ना स्वाभाविक ही है। अुनकी साधना जितनी व्यक्तिगत थी अुतनी ही वह विश्वसाधना भी थी और अिसीलिअे यह निश्चित है कि भविष्यकालके मनुष्य-की शुभ प्रवृत्ति अिस साधनाके रंगसे रँगेगी। साधनाशुद्धिका अुनका आग्रह दुनियाके गले आसानीसे नहीं अुतरेगा। लेकिन अुद्धारके लिअे दूसरा रास्ता ही नहीं है।

नान्यः पन्थाः विद्यते अयनाय।

सभा के अन्य प्रकाशन

नक्षत्रमाला—भर्तृहरिके नीति और वैराग्य शतकोंमें से खास विद्यार्थियोंके लिए चुने हुए २७ सुभाषितोंका संग्रह। हिन्दुस्तानी तर्जुमा और टिप्पणियोंके साथ।

सम्पादक : काका साहब कालेलकर — कीमत : २० न० पै०

बापू की झांकियाँ—पू० गांधीजीके दिलचस्प संस्मरणोंका संग्रह। श्री काका साहब कालेलकरजीकी लिखी हुई हिन्दी किताबका आसान हिन्दुस्तानी तर्जुमा, उर्दू लिपिमें। — कीमत : १.७५ न० पै०

प्राचीन कविता-संग्रह—(द्वितीय संस्करण) कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई आदि महान् संतोंकी चुनी हुई वाणीका यह नवनीत है। आखिरमें कठिन शब्दों और पंक्तियोंके सरल अर्थ देकर यह संग्रह विद्यार्थियोंके लिए उपयोगी बनाया गया है।

सम्पादक : रसूल अहमद 'अबोध' — कीमत : १.५० न० पै०

दो आम—(द्वितीय संस्करण) विद्यार्थियोंके लिए बोधक और प्रेरक एक छोटी-सी नाटिका, जो एक सत्य घटना पर आधारित है।

लेखक : काका साहब कालेलकर — कीमत : ३७ न० पै०

मंगल-प्रभात—आश्रमके व्रतों पर पू० गांधीजीके लिखे हुए मजमूनों का सरल हिन्दुस्तानी अनुवाद। अखीरमें कठिन संस्कृत शब्दोंके आसान हिन्दुस्तानी मानी भी दिये गये हैं। — कीमत : ३७ न० पै०

मंगल प्रभात

सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका : सम्पादक—काका कालेलकर। सालाना चंदा : **पांच रुपया**, एक प्रतिका १२ न० पै०।

इसमें गांधीजीकी विचारधारा पर और अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों पर लेख छपते रहते हैं।